Method of Knowledge

देकार्त का विचार :— देकार्त दर्शन के क्षेत्र में निष्पक्ष एवं तटस्थ भाव से चिंतन करना चाहते थे। देकार्त का उद्देश्य ऐसे निश्चित सिद्धांतो अथवा स्वयं सिद्ध उक्तियों के सम्मुख ही खोज करना था जिन्हे सामान्य दृष्टिकोण तथा बुद्धि के आधार पर स्वीकार किया जा सके। देकार्त ने यह देखा की दर्शन में ऐसा कोई विषय नहीं है जिसपर विवाद न हो। अतएव दोषयुक्त तथा अबौद्धिक विचारों से मुक्त होने के लिए उसने यह आवश्यक समझा की ज्ञानमीमांसा की नई नींव की प्रतिस्थापना की जाए।

इस लिए उन्होंने एक दार्शनिक पद्धति को अपनाया जिसे अन्वेषण की विधि कहा जिसमें अंतर्दृष्टि को अधिक स्थान दिया गया है। अंतर्दृष्टि का आधार भूमि में रखते हुए देकार्त ने अपनी सुविधा के लिए चार सीढ़ियों का उल्लेख किया है जो इस प्रकार है—

1) जब तक हम किसी बात को स्पष्ट न जान लें तब तक हमें उसे सत्य के रूप में स्वीकार नहीं करना चाहिए।

2) हमें अपनी कठिनाईयों को यथासंभव सरल से सरलतम टुकड़ो में बाँट लेना चाहिए।

3) सरलतम बातों से शुरू करके जटिल बातों की ओर क्रमशः बढ़ना चाहिए।

4) हमेशा हमें अपनी परिगणना को इतना पूर्ण कर लेना चाहिए की किसी हिस्से की छूट जाने की गुंजाइश न रहे।

स्पष्ट एवं निश्चित ज्ञान के लिए कौन सी पद्धति का अनुसरण करना चाहिए यह महत्वपूर्ण प्रश्न है। देकार्त ने निगमनात्मक पद्धति को ही दर्शन में उपयोगी बनाने पर बल दिया है। देकार्त की दार्शनिक पद्धति है संदेह ही। किन्तु देकार्त संदेहवादी नहीं है, वे हैं कट्टर बुद्धिवादी। संदेह उनके लिए साधन मात्र है साध्य नहीं, सत्य निश्चयात्मक है किन्तु निश्चय पर पहुँचने के लिए संदेह करना आवश्यक है। दार्शनिक के लिए आवश्यक है कि वह किसी सिद्धांत पर पहुँचने के पूर्व हर प्रकार की पूर्वमान्यताओं, पूर्वधारणाओं और पक्षपातों से रहित होकर विचार करे। इन्द्रिय प्रत्यक्ष या आगम से अमुक बात प्रमाणित होती है, अतः वह सत्य है — इस प्रकार का विचार ठीक नहीं है, यह रूढ़िवाद है, पक्षपात है, अंधविश्वास है, यह दार्शनिकों को शोभा नहीं देता। दर्शन का उद्गम संशय है। ग्रीक युग में प्लेटो ने कहा था ज्ञान का उद्गम आश्चर्य है। मध्ययुग में शास्त्रीय विचारक कहते थे कि ज्ञान का उद्गम विश्वास है। आधुनिक युग में देकार्त ने कहा कि ज्ञान का उद्गम संदेह है। देकार्त के अनुसार सत्य स्वयंसिद्ध और निश्चयात्मक है। सत्य की सार्वभौमता, सहजता, अबाधिता और निश्चयात्मकता देकार्त को सर्वथा मान्य है किन्तु इस सत्य की प्राप्ति का साधन है संदेह। निश्चयात्मक सत्य साध्य है संदेह साधन। जो संदेह को साधन के रूप में अपनाता है वह बुद्धिवादी सत्य तक पहुँच जाता है। देकार्त के संदेह का यही अर्थ है कि बिना किसी विश्वास या अंधविश्वास या पक्षपात या पूर्वमान्यता के निष्पक्ष विचार किया जाए और जब तक कोई भी वस्तु अपनी सत्ता को इतना सुस्पष्ट न प्रकाशित करे कि उसके विषय में संदेह कोई स्थान न रहे तब तक उसे सत्य न माना जाए।

अपनी इस संदेह पद्धति से देकार्त ने